11119CH12

द्वादश अध्याय

शास्त्रीय साहित्य

वाङ्मय दो प्रकार का होता है— शास्त्र एवं काव्य। काव्य का विवेचन पूर्व अध्यायों में हो चुका है। अब शास्त्र का विवेचन किया जा रहा है। वैदिक वाङ्मय को यथार्थ रूप में समझने के लिए अत्यन्त प्राचीनकाल में ही व्याकरण, ज्योतिष, गणित जैसे शास्त्रों का विकास हुआ। सामान्यतया ऐसे साहित्य को शास्त्र कहते हैं, जो ज्ञान अथवा विज्ञान के तथ्यों का विवेचन करता है और उसे ‘स्वीकार न करना समुचित नहीं माना जाता है। उदाहरणार्थ व्याकरण के नियमों को समुचित नहीं माना जाता है। व्याकरण के नियमों को न मानने पर वैसा किया हुआ प्रयोग सही नहीं माना जाता है। इसी प्रकार वैदिक साहित्य में बिखरे हुए विभिन्न विचारों से धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, दर्शनशास्त्र, काव्य शास्त्र, वास्तुशास्त्र इत्यादि अनेक शास्त्र विकसित हुए। ये शास्त्र विभिन्न युगों में अपने समय की आवश्यकता के अनुसार विभिन्न विभागों में बँट गए और इन शास्त्रों से सम्बद्ध अनेक ग्रन्थ लिखे गए तथा इन पर टीकाएँ भी लिखी गईं। टीकाओं में मूलग्रन्थों के भावों को समझने के अतिरिक्त नए तथ्य भी आए। कुछ टीकाएँ संक्षिप्त थीं, तो कुछ बहुत विस्तृत भाष्यों के रूप में थीं। इसी प्रकार विभिन्न शास्त्रों में ग्रन्थों की संख्या बढ़ गई। किसी भी एक शास्त्र के सभी ग्रन्थों को पढ़ पाना भी किसी व्यक्ति के लिए सरल नहीं है। इसी से शास्त्रीय साहित्य की विशालता समझी जा सकती है।

शास्त्रीय साहित्य का विकास वस्तुत: वैदिक युग से ही आरंभ होता है। वैदिक मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण करके उन्हें सही अर्थों में समझने के लिए तीन विभिन्न शास्त्रों का जन्म हुआ— शिक्षा, व्याकरण तथा निरुक्त। वैदिक काल में ये तीनों शास्त्र पृथक्-पृथक् प्रचलित थे, किन्तु लौकिक संस्कृत के काल में ये तीनों व्याकरण में ही समाविष्ट हो गए। इससे व्याकरण शास्त्र का क्षेत्र बढ़ गया।

वैदिक यज्ञों में वेदिका तथा यज्ञशाला के निर्माण के क्रम में गणित तथा भवन-विज्ञान (वास्तुशास्त्र) का उद्भव हुआ। *अथर्ववेद* में चिकित्सा से सम्बद्ध बहुत से संकेत मिलते हैं। परवर्ती युग में उनका विकास आयुर्वेद के रूप में हुआ।

© NCERT not to be republished

वैदिक साहित्य में अनेक स्थानों पर जनसामान्य के सामाजिक और धर्म-संबंधी विचार व्यक्त किए गए थे। उनका संकलन करके धर्मशास्त्र बनाया गया। *ऋग्वेद* और *अथर्ववेद* में जो दार्शनिक चिन्तन पाए जाते हैं, उनका विकास उपनिषदों में हुआ और यही चिन्तन आगे चलकर दर्शनशास्त्र के रूप में उभरा। दर्शनशास्त्र, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदान्त— इन छ: आस्तिक तथा चार्वाक, जैन एवं बौद्ध— इन तीन नास्तिक दर्शनों के रूप में विकसित हुआ।

वेदों में नर-नारी के प्रेम को कई रूपों में निर्दिष्ट किया गया है। इन विचारों से कामशास्त्र का विकास हुआ। काव्य में अलंकारों के प्रयोगों का विवेचन करने के लिए काव्यशास्त्र का आविर्भाव हुआ। राजनीति का विवेचन यद्यपि पहले धर्म-शास्त्र के अंग के रूप में होता था, किंतु बाद में यह अर्थशास्त्र के नाम से पृथक् शास्त्र बन गया। इस प्रकार संस्कृत भाषा में अनेक शास्त्र विकसित हुए।

आरम्भिक अवस्था में ये शास्त्र इधर-उधर बिखरे हुए थे, किन्तु कालक्रम से इन्हें आकर ग्रन्थों के रूप में व्यवस्थित किया गया। शास्त्रों के अध्ययन की समृद्ध परम्परा भारतवर्ष में रही है। यही हमारा प्राचीन विज्ञान है, दर्शन है और भारतीय मेधा का उत्कर्ष है। अपने शास्त्रीय साहित्य पर आज भी संस्कृत वाङ्मय को गर्व है।

प्रमुख शास्त्रीय ग्रन्थों का परिचय

1. **शब्दकोश विज्ञान**— वैदिक युग से ही शब्दकोश-निर्माण की पद्धति चलती आ रही है। वैदिक शब्दों के संग्रह को *निघण्टु* कहा जाता है। समय-समय पर विविध कोशों की रचना भारत में होती रही है। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध *नामलिङ्गानुशासन* है, जो कोशकार अमरसिंह के नाम पर *अमरकोश* के नाम से अधिक विख्यात है। इसकी रचना प्राय: तीसरी शताब्दी ई. में हुई थी। इस ग्रन्थ में तीन काण्ड हैं, जिनमें वैज्ञानिक ढंग से वर्गीकरण करके पर्यायवाची शब्दों का श्लोकबद्ध संग्रह किया गया है। यद्यपि बाद में भी हलायुध की *अभिधानरत्नमाला,* यादव प्रकाश का *वैजयन्तीकोश,* महेश्वर का *विश्वप्रकाश,* हेमचन्द्र की *अभिधानचिन्तामणि* आदि कोश ग्रन्थ लिखे गए, किन्तु *अमरकोश* का महत्त्व आज भी अक्षुण्ण है। इस पर प्राय: 40 टीकाएँ लिखी गईं।

आधुनिक काल में वर्णमाला के क्रम से शब्दों को सजाकर दो महान् कोश लिखे गए, जिनमें ताराचंदवागीश (छ: भागों में) तर्कवाचस्पति के द्वारा संकलित *वाचस्पत्यम्*

2019-2020

© NCERT not to be republished

तथा राधाकान्तदेव द्वारा पाँच भागों में प्रस्तुत कराया गया *शब्दकल्पद्रुम* विशेष उल्लेखनीय है।

2. **छन्द:शास्त्र**— इस शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ पिङ्गलाचार्य के द्वारा लिखित छन्द:सूत्र है। इसमें वैदिक और लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों के नियम सूत्र रूप में लिए गए हैं। क्षेमेन्द्र ने *सुवृत्ततिलक* नामक लघु पुस्तक में छन्दों के पद्यबद्ध लक्षण दिए हैं, जो उदाहरण का काम भी करते हैं। इन्होंने संस्कृत के विभिन्न कवियों के द्वारा प्रयुक्त कई छंदों की प्रशंसा भी की है। केदारभट्ट (पन्द्रहवीं शताब्दी ई.) का *वृत्तरत्नाकर* तथा गंङ्गादास कृत *छन्दोमञ्जरी* छन्द:शास्त्र के अन्य सुप्रचलित ग्रन्थ हैं।
3. **व्याकरणशास्त्र**— वैदिक साहित्य में शब्दों के उच्चारण, प्रकृति-प्रत्यय के रूप में शब्दों का विभाजन, वचन, काल आदि के विषय में कई स्थलों पर विवेचन है। इससे व्याकरणशास्त्र का विकास हुआ। यद्यपि शाकटायन, शौनक, शाकल्य, स्फोटायन इत्यादि कई प्राचीन व्याकरण शास्त्री हुए, किन्तु आज सर्वप्रथम उपलब्ध ग्रन्थ पाणिनि की *अष्टाध्यायी* ही है। आठ अध्यायों में पाणिनि ने लौकिक संस्कृत और वैदिक संस्कृत से सम्बद्ध प्राय: 4,000 सूत्र लिखे हैं। इस ग्रंथ में दोनों भाषाओं का सर्वाङ्गपूर्ण विवरण दिया गया है। पाणिनि के सूत्र अत्यन्त संक्षिप्त हैं, किन्तु व्यापक रूप से संस्कृत भाषा के नियमों को प्रस्तुत करते हैं। पाणिनि का समय प्राय: 500 ई. पू. माना जाता है। इन सूत्रों पर संक्षिप्त टिप्पणियों के रूप में वार्तिक लिखने वाले कात्यायन (350 ई. पू.) हुए, जिन्होंने कहीं-कहीं सूत्रों में दिए गए नियमों को आगे बढ़ाया और कहीं उनमें संशोधन का सुझाव दिया। इसके बाद पतञ्जलि (150 ई. पू.) हुए, जिन्होंने पाणिनि के सूत्र और कात्यायन के वार्तिक दोनों पर संयुक्त रूप से *महाभाष्य* नामक आलोचनात्मक ग्रन्थ लिखा। इन तीनों आचार्यों को समुदित रूप से व्याकरणशास्त्र में त्रिमुनि अथवा मुनित्रय कहा जाता है।

अष्टाध्यायी तथा *महाभाष्य* पर अनेक व्याख्याएँ लिखी गईं, इनमें वामन और जयादित्य की *काशिकावृत्ति* अष्टाध्यायी की श्रेष्ठ व्याख्या के रूप में प्रसिद्ध है। कुछ समय के बाद पाणिनि के सूत्रों को सरलता की दृष्टि से नए रूप में व्यवस्थित करके प्रक्रियाग्रन्थ लिखे गए, जिनमें रामचन्द्र (1400 ई.) की *प्रक्रियाकौमुदी* और भट्टोजिदीक्षित (1600 ई.) की *सिद्धान्तकौमुदी* प्रसिद्ध हैं। पाणिनीय व्याकरण में प्रवेश के लिए वरदराज कृत *लघुसिद्धान्तकौमुदी* जैसे सरल ग्रन्थ भी लिखे गए। *सिद्धान्तकौमुदी* पर टीकाओं का प्राचुर्य है, जिनका अध्ययन नव्य व्याकरण के अन्तर्गत होता है।

© NCERT not to be republished

पाणिनीय व्याकरण के अन्तर्गत कुछ दार्शनिक ग्रन्थ भी लिखे गए जिनमें भाषा के अर्थ-पक्ष या दर्शन पर विचार किया गया। इन ग्रन्थों में भर्तृहरि (500 ई.) का *वाक्यपदीय,* कौण्डभट्ट (1650 ई.) का *वैयाकरणभूषणसार* तथा नागेशभट्ट (1700 ई.) की *वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा* प्रसिद्ध हैं।

पाणिनि के अतिरिक्त अन्य वैयाकरणों ने भी विभिन्न व्याकरण-सम्प्रदायों को प्रवर्तित किया। इनमें कातन्त्र, चान्द्र, शाकटायन, हैम, सारस्वत तथा सौपद्म सम्प्रदाय भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित हैं। प्राचीन वैयाकरणों के विषय में यह श्लोक प्रचलित है—

इन्द्रश्चन्द्र: काशकृत्स्नापिशली शाकटायन:।
पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्टादिशाब्दिका:।।

4. **धर्मशास्त्र**— आचार-व्यवहार की शिक्षा के लिए वैदिक धर्म-सूत्रों पर आश्रित अनेक स्मृतियाँ लिखी गईं। इनमें वर्णाश्रम व्यवस्था, राजा के कर्त्तव्य, विवाद का निर्णय आदि विविध विषयों पर प्रकाश डाला गया है। यह सामान्य धारणा है कि स्मृतियाँ श्रुतियों अर्थात् वेदों का अनुसरण करती हैं। इन स्मृतियों के आधार पर ही हिन्दुओं के दीवानी और फौजदारी कानून बने हुए हैं। यद्यपि प्राचीन स्मृतियों के बहुत से नियम आज अपना अर्थ और महत्त्व खो चुके हैं, तथापि आज भी भारतीय सामाजिक व्यवस्था मूलत: स्मृतियों पर आश्रित है। इसलिए स्मृतियों के अध्ययन की अपनी उपयोगिता है।

स्मृति-ग्रंथों में सर्वाधिक महत्त्व *मनुस्मृति* का है। इसमें 12 अध्याय हैं, जिनमें सभी स्मृतियों की अपेक्षा अधिक व्यापक विषयवस्तु का प्रतिपादन श्लोकों में है। सृष्टि से आरंभ करके मानव समाज के विकास तथा दैनिक जीवन के कर्त्तव्यों का विवेचन करते हुए मोक्ष तक का इसमें विवेचन है। मनु को सभी मानवों का पिता कहा गया है। उन्होंने जीवन की व्यवस्था के लिए अपने नियम दिए हैं।

याज्ञवल्क्यस्मृति (300 ई.) में अपेक्षाकृत अधिक प्रगतिशील विचार दिए गए हैं। इसमें तीन अध्याय हैं— आचार, *व्यवहार* और *प्रायश्चित्त*। इस पर मिताक्षरा व्याख्या सुप्रसिद्ध है, जिसे हिन्दुओं के कुछ वर्गों में सर्वाधिक प्रमाणिक माना जाता है। *नारदस्मृति, विष्णुस्मृति* आदि अन्य कई स्मृतियाँ हैं। धर्मशास्त्र के अन्तर्गत स्मृतियों के अतिरिक्त निबन्ध-ग्रंथों की भी रचना हुई, जिनमें किसी धार्मिक व्यवस्था, अनुष्ठान, विवादग्रस्त विषय आदि का विवेचन हुआ। बारहवीं शताब्दी के बाद ऐसे अनेक निबन्ध लिखे गए। आधुनिक भारतीय कानूनों को अंग्रेजों ने इन निबन्धों के आधार पर ही बनाया था।

2019-2020

© NCERT not to be republished

5. **राजनीतिशास्त्र**— प्राचीन भारत में राजनीति को भी बहुत महत्त्व दिया जाता था। कहते हैं कि सुव्यवस्थित राज्य में ही सभी शास्त्र पनपते हैं। इसलिए राज्य को सुदृढ़ करने के लिए राजनीतिशास्त्र से संबद्ध पर्याप्त चर्चा होती रही। *महाभारत* का शान्ति पर्व इस दृष्टि से बहुत महत्त्व का है। प्राचीन धर्मशास्त्री और स्मृतिकार भी राजनीति की विवेचना करते हैं, किन्तु राजनीतिविषयक सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ कौटिल्य का *अर्थशास्त्र* है। इसमें 15 अधिकरण हैं, जिन्हें अध्यायों में विभक्त किया गया है। सम्पूर्ण *अर्थशास्त्र* सूत्रात्मक है। कहीं-कहीं श्लोकों में सूत्र की बातें दोहराई गई हैं।

अर्थशास्त्र में राजा की शिक्षा, मंत्रियों की नियुक्ति, गुप्तचरों की नियुक्ति, विभिन्न विभागीय अधीक्षकों के कर्त्तव्य, राज्य के दुष्ट नागरिकों का दमन, कृत्रिम मूल्य-वृद्धि, मिलावट तथा गलत नाप-तोल को रोकने के उपाय, राज्य के सात अंग, शान्ति और उद्योग, शत्रु पर आक्रमण, युद्ध, दुर्ग का घेरा, विष-प्रयोग आदि अनेक विषयों का साङ्गोपाङ्ग वर्णन है। कौटिल्य ने *अर्थशास्त्र* को कठोर अनुशासनबद्ध राजतन्त्र की दृष्टि से लिखा है। राजा आन्तरिक व्यवस्था रखे, प्रजा की रक्षा करे और युद्ध के लिए सदा तत्पर रहे। *अर्थशास्त्र* इस सिद्धान्त को मानता है कि लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साधनों का अच्छा-बुरा होना महत्त्वपूर्ण नहीं है। *अर्थशास्त्र राजतरङ्गिणी* के समान ही संस्कृत वाङ्मय का गौरव ग्रन्थ है।

6. **नीतिशास्त्र**— राजनीति के समान सामान्य व्यावहारिक नीति पर भी संस्कृत भाषा में कई ग्रन्थ लिखे गए हैं। *कामन्दकीयनीतिसार* अर्थशास्त्र के प्रमुख विषयों को श्लोकों में प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार सोमदेवसूरि कृत *नीतिवाक्यामृत* भी *अर्थशास्त्र* पर आश्रित है। *चाणक्यनीतिदर्पण* नीतिश्लोकों का अव्यवस्थित संग्रह है। भोज का *युक्तिकल्पतरु,* चण्डेश्वर का *नीतिरत्नाकर* और *शुक्रनीति* भी व्यावहारिक नीतिशास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ हैं।

7. **चिकित्साशास्त्र**— इसे आयुर्वेद कहा जाता है। बौद्ध ग्रन्थों से पता चलता है कि राजगृह में जीवक नामक बहुत बड़ा वैद्य रहता था, जिसने बुद्ध की भी चिकित्सा की थी। संस्कृत भाषा में इस शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ *चरकसंहिता* है। इसमें आठ खण्ड और 30 अध्याय हैं। इसकी रचना प्राय: गद्य में है। इसमें शल्य-क्रिया को छोड़कर चिकित्सा के सभी विषयों का प्रतिपादन है। इसका समय प्रथम शताब्दी ई. माना जाता है। इस शास्त्र का दूसरा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ *सुश्रुत-संहिता* है, जिसमें शल्यक्रिया पर बहुत बल दिया गया है। इसमें शल्यक्रिया के उपकरणों का भी परिचय दिया गया

2019-2020

© NCERT not to be republished

है। दोनों ग्रन्थ सातवीं-आठवीं शताब्दी में अरबी भाषा में रूपांतरित हो चुके थे।

वाग्भट के दो चिकित्सा–ग्रन्थ मिलते हैं— *अष्टांगसंग्रह* और *अष्टांगहृदयसंहिता*। विद्वानों का मत है कि इन दोनों की रचना वाग्भट नाम के दो व्यक्तियों ने की थी, जो एक ही वंश में हुए थे। नागार्जुनकृत *योगसार,* शार्ङ्गधर-रचित *शार्ङ्गधरसंहिता* (तेरहवीं शताब्दी), भावमिश्र-रचित *भावप्रकाश* इत्यादि इस शास्त्र के अन्य प्रमुख ग्रंथ हैं।

8. **ज्योतिष तथा गणित**— इस क्षेत्र में भारतीयों की उपलब्धि वैदिक युग से ही मिलती है। नक्षत्रों की गणना, ग्रहों का विचार, काल-गणना आदि के क्षेत्र में भारतीय ज्योतिषियों की अद्भुत क्षमता थी। 476 ई. में उत्पन्न आर्यभट्ट ने 121 पद्यों में *आर्यभटीय* नामक ग्रंथ लिखा था। उन्होंने पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूमना सिद्ध किया था। उनके ग्रहण-विषयक सिद्धांत आज भी मान्य हैं। वराहमिहिर ने प्राय: 550 ई. में ज्योतिषशास्त्र के विभिन्न सिद्धांतों पर *पञ्चसिद्धांतिका* नामक ग्रंथ लिखा था। सातवीं शताब्दी में ब्रह्मगुप्त ने *ब्रह्मस्फुटसिद्धांत* की रचना की। भास्कराचार्य (बारहवीं शताब्दी) ने *सिद्धांत-शिरोमणि* नामक सिद्धांतग्रंथ के अतिरिक्त *लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणित* तथा *गोलाध्याय* नामक गणित-ग्रंथ लिखे। गणित के क्षेत्र में आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त तथा श्रीधर का भी महान् योगदान है। आर्यभट्ट ने विश्व में पहली बार शून्य अंक एवं दशमलव का आविष्कार किया, जिससे गणित के क्षेत्र में एक नए युग का आरम्भ हुआ।

फलित ज्योतिष के क्षेत्र में वराहमिहिर की *बृहत्संहिता, बृहज्जातक* और *लघुजातक* नामक ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। *विद्यामाधवीय* तथा *ज्योतिर्विदाभरण* नामक ग्रन्थों में फलित ज्योतिष का विवेचन है। कुछ ज्योतिषियों ने शकुनविद्या, भविष्यफल, स्वप्नविज्ञान तथा सामुद्रिक शास्त्र के विषय में भी विभिन्न ग्रंथ लिखे।

9. **दर्शनशास्त्र**— *ऋग्वेद* में कई दार्शनिक सूक्त हैं, जिनमें संसार के मूल तत्त्व और सृष्टि-प्रक्रिया का विवरण मिलता है। बाद में उपनिषदों में इन्हीं विषयों का रोचक विवेचन किया गया। आत्मा, ब्रह्म, जगत्, मृत्यु, जीवन आदि की व्याख्या रोचक उपाख्यानों के द्वारा इनमें की गई। वैदिक साहित्य के बाद दार्शनिक धारा दो भागों में विभक्त हो गई। पहली धारा वैदिक परंपरा को आगे बढ़ाने वाली थी, जिसे आस्तिक कहा गया। दूसरी धारा वैदिक परम्परा के विरोध में चली, जिसे नास्तिक कहा गया।

नास्तिक दर्शन के तीन रूप मिलते हैं— चार्वाक, जैन और बौद्ध। चार्वाक पूर्णत: भौतिकवादी दर्शन है, जिसमें ईश्वर, धर्म, आत्मा, परलोक आदि उन सभी विषयों का

2019-2020

© NCERT not to be republished

खण्डन है जो प्रत्यक्ष नहीं है। चार्वाक दर्शन का प्रचार बहुत हुआ, जिससे इसका नाम लोकायत भी पड़ा। बृहस्पति इस दर्शन के प्रणेता माने जाते हैं। इनका कोई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ नहीं मिलता। बौद्ध दर्शन महात्मा बुद्ध के द्वारा आरंभ हुआ। आरंभ में इसके ग्रन्थ पालि भाषा में लिखे गए, किंतु बाद में संस्कृत भाषा में बौद्ध दर्शन के ग्रन्थ लिखे गए। तिब्बत, चीन, जापान, श्रीलंका, थाइलैण्ड इत्यादि देशों में भी यह धर्म उन देशों की भाषाओं में विकसित हुआ। संस्कृत में महायान धर्म की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें लिखी गईं। बौद्ध दर्शन की चार शाखाएँ हो गईं, जैसे- शून्यवाद, विज्ञानवाद, सौत्रान्तिक एवं वैभाषिक। *सद्धर्मपुण्डरीक, ललितविस्तर, लंकावतारसूत्र, माध्यमिककारिका, अभिधर्मकोश* इत्यादि प्रमुख बौद्ध ग्रन्थ हैं, जो संस्कृत में लिखे गए। जैन धर्म का विकास भी बौद्ध-धर्म के पूर्व ही हो चुका था। इसके अधिकांश ग्रन्थ प्राकृत में हैं, किन्तु बाद में संस्कृत में भी बहुत से जैन ग्रंथ लिखे गए। उमास्वामी या उमास्वाति (100 ई.) का *तत्त्वार्थाधिगमसूत्र* प्रथम संस्कृत रचना है जिसमें जैनों के सिद्धांतों का सर्वांगपूर्ण वर्णन है। जैनों ने संस्कृत भाषा में दर्शन, काव्य, व्याकरण तथा अन्य क्षेत्रों में भी रचनाएँ कीं।

आस्तिक दर्शन के छह रूप मिलते हैं— सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदान्त। इनमें प्रत्येक दर्शन का विशाल साहित्य उपलब्ध है।

मीमांसा का आरंभ जैमिनि के *मीमांसासूत्र* (12 अध्याय) से होता है। इस पर शबरस्वामी ने भाष्य लिखा। इस भाष्य पर प्रभाकर ने *बृहती* टीका लिखी। दूसरी ओर कुमारिल ने इसकी व्याख्या तीन पृथक् पुस्तकों में की। इनमें *श्लोकवार्तिक* और *तन्त्रवार्तिक* प्रसिद्ध हैं। प्रभाकर और कुमारिल ने मीमांसा में दो पृथक् संप्रदाय चलाए, जिनमें कई विषयों पर मतभेद है। मीमांसा दर्शन मुख्यत: वैदिक वाक्यों पर आधारित धर्म की व्याख्या करता है। मीमांसा दर्शन के प्रारम्भिक ज्ञान के लिए लौगाक्षि भास्कर का *अर्थसंग्रह* महत्त्वपूर्ण है। वैदिक ज्ञानकाण्ड पर आश्रित वेदान्त दर्शन वस्तुत: उपनिषदों का तत्त्वचिंतन है, जिसे बादरायण ने अपने *ब्रह्मसूत्र* में निबद्ध किया। इस सूत्र पर शंकराचार्य ने अपना भाष्य लिखा, जिससे अद्वैतवेदान्त का विकास हुआ। शांकरभाष्य पर कई टीकाएँ लिखी गईं, जिनमें वाचस्पति की *भामती* नामक टीका विशेष उल्लेखनीय है। सदानन्द (सत्रहवीं शताब्दी) का सदानन्द कृत *वेदान्तसार* वेदान्त शास्त्र में प्रवेश कराने वाला एक सरल ग्रंथ है। ब्रह्मसूत्र पर अनेक आचार्यों ने अपनी व्याख्याएँ लिखकर अपने-अपने संप्रदाय चलाए। रामानुज (1100 ई.) ने श्रीभाष्य के द्वारा विशिष्टाद्वैत संप्रदाय चलाया और विष्णु की भक्ति को प्रधानता दी। मध्वाचार्य ने द्वैत सिद्धांत और वल्लभाचार्य ने

2019-2020

© NCERT not to be republished

शुद्धाद्वैत सिद्धांत का श्रीगणेश किया। वेदान्त के विभिन्न दार्शनिक विचारों को संकलित करके *योगवासिष्ठ* नामक ग्रंथ की रचना मनोहर काव्य शैली में की गई।

न्यायदर्शन का प्रवर्तन गौतम ने *न्यायसूत्र* लिखकर किया, जिसपर वात्स्यायन ने *भाष्य* लिखा। इस भाष्य पर उद्योतकर ने *न्यायवार्तिक* लिखा। इस वार्तिक पर वाचस्पति मिश्र ने *तात्पर्यटीका* लिखी। इस टीका की व्याख्या उदयनाचार्य ने *परिशुद्धि* के नाम से लिखी। वस्तुत: टीका पर टीका लिखने का यह क्रम बौद्ध न्यायदर्शन के विरुद्ध संघर्ष के कारण चला। न्यायशास्त्र के सिद्धांतों का खण्डन बौद्ध लोग अपने ग्रन्थों में करते थे। इसलिए उनके आक्षेपों से रक्षा के लिए न्यायशास्त्रियों ने टीकाएँ लिखीं। जयन्तभट्ट ने न्यायमञ्जरी में न्यायसिद्धांत के विरोधी सभी सिद्धांतों का खंडन किया। गंगेश उपाध्याय (तेरहवीं शताब्दी) ने तत्त्वचिन्तामणि लिखकर न्यायशास्त्र को एक नया रूप दिया, जिसे **नव्य न्याय** कहते हैं। इस ग्रंथ पर व्याख्याओं का विपुल साहित्य लिखा गया। नव्य न्याय से सभी शास्त्रों को सूक्ष्म अभिव्यक्ति में सहायता मिली।

वैशेषिक दर्शन का प्रवर्तन कणाद ने किया। न्याय और वैशेषिक मिलते-जुलते दर्शन हैं। कणाद के वैशेषिक सूत्र की व्याख्याएँ बाद में लिखी गई, किंतु इस दर्शन के प्रशस्तपाद भाष्य में *पदार्थधर्मसंग्रह* को अधिक महत्त्व मिला। इसकी व्याख्याओं के द्वारा इस दर्शन के सिद्धांत प्रचारित हुए। न्याय और वैशेषिक को मिलाकर कई ग्रंथ लिखे गए, जिसमें केशवमिश्र की *तर्कभाषा* और विश्वनाथ की *न्यायसिद्धान्तमुक्तावली* प्रमुख है। अन्नम्भट्ट का *तर्कसंग्रह* इन दर्शनों में प्रवेश के लिए सरलतम ग्रन्थ है।

सांख्यदर्शन का प्रवर्तन महर्षि कपिल ने किया था। इस पर तेरहवीं शताब्दी ई. में विज्ञानभिक्षु ने *सांख्यप्रवचनभाष्य* लिखा। ईश्वरकृष्ण (300 ई.) की *सांख्यकारिका* सर्वाधिक प्रचलित ग्रंथ है। इस पर वाचस्पति ने *तत्त्वकौमुदी* टीका लिखी थी। सांख्य दर्शन में पुरुष और प्रकृति का जो विवेचन किया गया है, उसे व्यावहारिक रूप देने के लिए पतञ्जलि ने योगसूत्र लिखा। इस पर व्यास का भाष्य और कई अन्य व्याख्याएँ भी मिलती हैं।

विभिन्न दर्शनों के सिद्धांतों का संग्रह तथा विवेचन करने वाले ग्रंथ भी समय-समय पर लिखे जाते रहे। इनमें हरिभद्र (आठवीं शताब्दी) का *षड्दर्शन-समुच्चय* तथा माधवाचार्य (चौदहवीं शताब्दी) का *सर्वदर्शनसंग्रह* बहुत प्रसिद्ध हैं।

10. काव्यशास्त्र— काव्यशास्त्र को अलंकारशास्त्र तथा साहित्यशास्त्र भी कहते हैं, इसमें काव्य, नाटकादि के लक्षण, गुण, दोष, रीति, अलंकार, रस, ध्वनि तथा

2019-2020

शब्दशक्ति पर विचार होता है। इस शास्त्र का विशाल साहित्य उपलब्ध है। इसमें शताधिक मौलिक ग्रंथ लिखे गए हैं, टीकाओं की तो बात ही अलग है।

इस शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ भरतमुनि निर्मित *नाट्यशास्त्र* है। यह ग्रन्थ मुख्यत: श्लोकबद्ध है। इसमें 36 अध्याय हैं। मूलत: यह नाट्य एवं रस का विचार करता है, किंतु श्रव्य-काव्य संबंधी बहुत-सी बातें भी इसमें मिलती हैं। उसकी रचना 100 ई. पू. से पहले हो चुकी थी।

भामह (छठी शताब्दी) का *काव्यालंकार* छ: परिच्छेदों में विभक्त है। पूरा ग्रंथ श्लोकबद्ध है। भामह अलंकारों पर बहुत बल देते हैं। दण्डी (छठी शताब्दी) ने तीन परिच्छेदों में *काव्यादर्श* नामक ग्रंथ लिखा, जिसमें उन्होंने काव्य के भेदों की परिभाषाएँ देकर अलंकारों की विवेचना की है। पूरा ग्रन्थ पद्यात्मक है।

वामन (800 ई.) ने *काव्यालंकारसूत्र* नामक ग्रन्थ में रीति को काव्य की आत्मा माना है। यह पाँच अधिकरणों का सूत्रात्मक ग्रंथ है। इसमें दोष, गुण, अलंकार तथा कतिपय विवादास्पद कवि प्रयोगों का विवेचन है। आनन्दवर्धन (850 ई.) का *ध्वन्यालोक* काव्यशास्त्र के क्षेत्र में एक युगान्तरकारी रचना है, जिसमें प्रतीयमान अर्थ को काव्य में महत्त्व दिया गया है, व्यंजना-शक्ति को पृथक् मान्यता दी गई है और ध्वनि को काव्य की आत्मा माना गया है। इस ग्रंथ में चार उद्योत हैं। पूरा ग्रन्थ कारिका और उसकी वृत्ति के रूप में है। कुन्तक ने *वक्रोक्तिजीवित* में वक्रोक्ति सिद्धांत का प्रतिपादन किया और वक्रोक्ति को काव्य का जीवन कहा गया है। इसमें चार उन्मेष हैं। राजशेखर की *काव्यमीमांसा* 18 अध्यायों का ग्रंथ है। इसमें काव्य के निर्माता के व्यक्तित्व के विकास की विवेचना हुई है। कवियों के लिए इसमें व्यावहारिक नियम दिए गए हैं। यह कवि शिक्षा का प्रथम ग्रन्थ है। महिमभट्ट का *व्यक्तिविवेक* आनन्दवर्धन की मान्यता की आलोचना करने के लिए लिखा गया था। धारानरेश भोज (1000 ई.) ने काव्यशास्त्र में *सरस्वतीकण्ठाभरण* तथा *शृंगारप्रकाश* नामक दीर्घकाय ग्रंथ लिखे। इसी काल में कश्मीर में अभिनवगुप्त ने नाट्यशास्त्र की टीका *अभिनवभारती* तथा ध्वन्यालोक पर लोचन टीका लिखी। मम्मट (बारहवीं शताब्दी) ने *काव्यप्रकाश* लिखकर ध्वनि-विरोधियों का खंडन करते हुए काव्य का सर्वांगपूर्ण विवेचन किया। इस ग्रन्थ पर सर्वाधिक टीकाएँ लिखी गईं, जिनसे काव्यप्रकाश के प्रभाव और लोकप्रियता का पता चलता है। विश्वनाथ (चौदहवीं शताब्दी ई.) का *साहित्यदर्पण* काव्यप्रकाश से भी अधिक व्यापक

2019-2020

© NCERT not to be republished

रूप से काव्यशास्त्रीय विषयों का विवेचन करता है। इसमें नाट्य-शास्त्र को भी समाविष्ट किया गया है। जिस प्रकार काव्यप्रकाश में 10 उल्लास हैं, उसी प्रकार साहित्यदर्पण में 10 परिच्छेद हैं। दोनों ग्रंथ कारिका और वृत्ति के रूप में लिखे गए हैं। रूपगोस्वामी (पन्द्रहवीं शताब्दी) ने भक्ति रस को स्वतंत्र तथा महत्त्वपूर्ण रस सिद्ध करने के लिए दो विशाल ग्रन्थ लिखे— *भक्तिरसामृतसिन्धु* तथा *उज्ज्वलनीलमणि।* जगन्नाथ (सत्तरहवीं शताब्दी) का *रसगंगाधर* एक प्रौढ़ साहित्यशास्त्रीय ग्रंथ हैं। इसमें काव्य की नई परिभाषा देकर प्राचीन परिभाषाओं की आलोचना की गई है। इस ग्रन्थ में जगन्नाथ ने अपने ही उदाहरण दिए हैं। यह ग्रन्थ आननों में विभक्त है एवं अपूर्ण है।

11. **अन्य व्यावहारिक शास्त्र**— कौटिल्य के *अर्थशास्त्र* का संबंध अन्य छोटे-छोटे शास्त्रों के साथ भी है। इनमें एक धनुर्वेद है जिसे उपवेद माना गया है। इस विषय का एक ग्रन्थ *कोदण्डमण्डन* मिलता है। शार्ङ्गधर की *वीरचिन्तामणि* में युद्ध-संबन्धी विषयों पर विचार किया गया है। इसी प्रकार गजशास्त्र और अश्वशास्त्र पर भी कई ग्रन्थ उपलब्ध हैं, जैसे— *मातङ्गलीला, अश्वायुर्वेद, अश्ववैद्यक* इत्यादि। शिल्पशास्त्र अथवा वास्तुशास्त्र पर भी कुछ साहित्य मिलता है, जैसे— *मनुष्यालयचन्द्रिका* (सात अध्याय), *मयमत* (24 अध्याय), भोज कृत *समराङ्गण-सूत्रधार,* मण्डन-रचित *वास्तुमण्डन* तथा *प्रासादमण्डन*। इनमें भवन-निर्माण की कला का विवरण प्राप्त होता है। *मानसार* में मूर्तिकला का वर्णन है। रत्नविज्ञान पर भी कई ग्रन्थ मिलते हैं, जैसे— बुद्धभट्ट की *रत्नपरीक्षा*, नारायण पण्डित की *नवरत्नपरीक्षा* इत्यादि। पाकशास्त्र पर *नलपाक* नामक ग्रन्थ है।

कुछ समय पूर्व महर्षि भरद्वाज कृत *यन्त्रसर्वस्व* नामक ग्रन्थ की प्राप्ति हुई है, जिसमें विमानविद्या का विवरण है। रसायनशास्त्र का प्राचीन भारत में बहुत प्रचार था। नागार्जुन इस विद्या के बड़े आचार्य थे। *रसार्णव* तथा *रसरत्नसमुच्चय* नामक ग्रन्थों में खनिज-धातुओं से विविध रसों के निर्माण की विधियाँ वर्णित हैं। बौद्धों ने इस क्षेत्र में बहुत काम किया।

वनस्पति-विज्ञान का अध्ययन भी आयुर्वेद का क्षेत्र है। अनेक वृक्षों तथा पौधों के गुण-धर्म, उन्हें पहचानने के साधन आदि का विचार करने के लिए कई ग्रन्थ लिखे गए, जैसे— *वृक्षायुर्वेद, उपवनविनोद* आदि। संगीतशास्त्र में भी प्राचीन भारत ने बहुत प्रगति की। नाट्यशास्त्र के अतिरिक्त *संगीतमकरन्द, संगीतरत्नाकर* (शार्ङ्गदेव-रचित), *सङ्गीतदर्पण* (दामोदर कृत) तथा *रागविबोध* इस विषय के प्रमुख ग्रन्थ हैं। नृत्यशास्त्र

© NCERT not to be republished

पर भी *अभिनयदर्पण* (नन्दिकेश्वर कृत), *श्रीहस्तमुक्तावली* आदि ग्रन्थ हैं। चित्र-कला पर पृथक् प्रकरण *विष्णुधर्मोत्तर पुराण* में मिलता है।

कामशास्त्र के क्षेत्र में वात्स्यायन का *कामसूत्र* सुविख्यात ग्रन्थ है। इसका काल तीसरी शताब्दी ई. माना जाता है। इसमें गद्य-पद्य का मिश्रण है और सात खण्ड हैं, जिनमें प्रेम, विवाह, नायिका, वेश्या, प्रणय की सफलता के उपाय आदि अनेक विषयों का वर्णन है। तेरहवीं शताब्दी में इस पर यशोधर ने जयमङ्गला व्याख्या लिखी। इस शास्त्र के अन्य ग्रन्थ हैं— *रतिमञ्जरी, रतिरहस्य* तथा कल्याणमल्ल कृत *अनङ्गरङ्ग* इत्यादि।

इस विवेचन से सिद्ध होता है कि विभिन्न शास्त्रों के क्षेत्र में भारतीय विद्वान् सभी युगों में योगदान करते रहे। उन्होंने ज्ञान और व्यवहार का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं छोड़ा। साधारण व्यवहार की बात हो या गंभीर दार्शनिक चिंतन की, सभी को सूक्ष्म नियमों के द्वारा प्रतिपादित किया गया। इससे संस्कृत साहित्य की व्यापकता सिद्ध होती है।

ध्यातव्य बिन्दु

- वैदिक काल से ही शास्त्रीय साहित्य का विकास हुआ।
- वैदिक युग में शिक्षा, व्याकरण तथा निरुक्त अलग-अलग शास्त्र थे, किन्तु लौकिक संस्कृत युग में तीनों व्याकरण में ही समाविष्ट हो गए।
- वैदिक यज्ञों में वेदिका तथा यज्ञशाला के निर्माण के क्रम में गणित तथा भवन-विज्ञान (वास्तुशास्त्र) का जन्म हुआ।
- *अथर्ववेद* में प्राप्त चिकित्सा से सम्बद्ध संकेतों से आयुर्वेद का विकास हुआ।
- वैदिक साहित्य के समाज तथा धर्म संबंधी विचारों का संकलन करके धर्मशास्त्र और *ऋग्वेद* तथा *अथर्ववेद* के दार्शनिक चिन्तनों से दर्शनशास्त्र का विकास हुआ। दर्शनशास्त्र मीमांसा, वेदान्त, सांख्य, योग, न्याय और वैशेषिक— इन छः रूपों में विकसित हुआ।
- वेदों से ही कामशास्त्र, काव्यशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि भी विकसित हुए।
- वैदिक शब्दों के कोश को *निघण्टु* कहा गया। बाद में चल कर अमर सिंह का अमरकोश, हलायुध की *अभिधानरत्नमाला*, यादवप्रकाश की *वैजयन्ती* आदि प्रसिद्ध कोशग्रन्थ हुए।
- पिंगलाचार्य के द्वारा लिखित छन्दःसूत्र छन्दशास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ है, जिसमें

2019-2020

© NCERT not to be republished

वैदिक और लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों का प्रयोग है। *सुवृत्ततिलक, वृत्तरत्नाकर* तथा *छन्दोमञ्जरी* आदि प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं।

- सर्वप्रथम उपलब्ध व्याकरण ग्रन्थ पाणिनि की *अष्टाध्यायी* ही है। पाणिनि, उनके सूत्रों के वार्तिककार कात्यायन और महाभाष्यकार पतञ्जलि— इन तीनों आचार्यों को व्याकरणशास्त्र में त्रिमुनि कहा जाता है।
- पाणिनि के अतिरिक्त कातन्त्र, चान्द्र, शाकटायन आदि व्याकरण सम्प्रदाय भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित हैं।
- धर्मशास्त्रों में वर्णाश्रम व्यवस्था, राजा के कर्तव्य, विवाद का निर्णय आदि विविध विषयों पर प्रकाश डाला गया है। *मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, पराशरस्मृति, नारदस्मृति, विष्णुस्मृति* आदि प्रमुख स्मृतियाँ हैं।
- राजनीति विषयक सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ कौटिल्य का *अर्थशास्त्र* है। व्यावहारिक नीति पर संस्कृत में अनेक ग्रन्थ लिखे गए हैं। *कामन्दकीयनीतिसार, नीतिवाक्यामृत, चाणक्यनीतिदर्पण, युक्तिकल्पतरु, नीतिरत्नाकर* और *शुक्रनीति* इस शास्त्र के प्रमुख ग्रन्थ हैं।
- धनुर्वेद, गजशास्त्र, अश्वशास्त्र, शिल्पशास्त्र, विमानविद्या, रसायनशास्त्र, वनस्पति-विज्ञान, संगीतशास्त्र आदि व्यावहारिक शास्त्र भी मिलते हैं।
- चिकित्साशास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ *चरकसंहिता* है। इसके अतिरिक्त *सुश्रुतसंहिता, अष्टांगहृदय* और *अष्टांगसंग्रह* आदि इस शास्त्र के अन्य प्रमुख ग्रन्थ हैं।
- ज्योतिष और गणित शास्त्र का *आर्यभटीय* नामक ग्रन्थ आर्यभट्ट द्वारा रचित है। इसके बाद इस शास्त्र में वराहमिहिर ने *बृहत्संहिता, बृहज्जातक* और *लघुजातक* नामक ग्रन्थ लिखे।
- दार्शनिक धारा दो भागों में विभक्त हो गई— आस्तिक तथा नास्तिक। वैदिक परम्परा को आगे बढ़ाने वाली धारा आस्तिक और विरोध करने वाली धारा नास्तिक कही गई।
- काव्यशास्त्र को अलंकारशास्त्र एवं साहित्यशास्त्र भी कहते हैं। इस शास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ भरतमुनि का *नाट्यशास्त्र* है। इसके बाद भामह, वामन, मम्मट आदि काव्यशास्त्री प्रसिद्ध हैं। जगन्नाथ का *रसगंगाधर* एक प्रकार से प्रौढ़ साहित्यशास्त्रीय ग्रन्थ है।

© NCERT not to be republished

अभ्यास-प्रश्न

प्र. 1. शास्त्रीय साहित्य का विकास वस्तुत: किस युग से आरंभ होता है?

प्र. 2. वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण तथा अर्थों को समझने के लिए किन शास्त्रों की आवश्यकता होती है?

प्र. 3. वैदिक यज्ञों में वास्तुकला की आवश्यकता क्यों पड़ी?

प्र. 4. आयुर्वेद का आधार कौन-सा ग्रन्थ है?

प्र. 5. दर्शनशास्त्र किन-किन रूपों में विकसित हुआ?

प्र. 6. काव्यशास्त्र के आविर्भाव का कारण बताइए।

प्र. 7. राजनीति का विवेचन पहले किस रूप में होता था?

प्र. 8. *अर्थशास्त्र* किस शास्त्र से विकसित हुआ?

प्र. 9. *निघण्टु* किसे कहते हैं? इसमें किसका संकलन किया गया है?

प्र.10. *अमरकोश* की रचना किस शताब्दी में हुई थी?

प्र.11. लेखक और ग्रन्थों को सही-सही मिलाइए—

क	**ख**
हलायुध	वैजयन्ती
यादवप्रकश	विश्वप्रकाश
महेश्वर	अभिधानरत्नमाला
हेमचन्द्र	अभिधानचिन्तामणि

प्र.12. *शब्दकल्पद्रुम* के लेखक कौन थे?

प्र.13. व्याकरणशास्त्र संबंधी सर्वप्रथम ग्रन्थ कौन-सा है और इसके रचयिता कौन है?

प्र.14. *अष्टाध्यायी* में कितने अध्याय और सूत्र हैं?

प्र.15. पाणिनि का समय क्या माना गया है?

प्र.16. कात्यायन कौन थे और व्याकरण में उनका क्या योगदान है?

प्र.17. *महाभाष्य* का विषय क्या है?

प्र.18. *सिद्धान्तकौमुदी* की रचना किसने की?

प्र.19. पाणिनीय व्याकरण में प्रवेश के लिए कौन-सा सरल ग्रन्थ लिखा गया है?

प्र.20. व्याकरण में 'त्रिमुनि' के नाम से कौन प्रसिद्ध हैं?

प्र.21. पाणिनीय व्याकरण पर लिखित कुछ दार्शनिक ग्रन्थों के नाम लिखिए।

प्र.22. पाँच वैयाकरणों के नाम लिखिए।

2019-2020

© NCERT not to be republished

प्र. 23. धर्मशास्त्र के अंतर्गत किन विषयों का विचार प्राप्त होता है?

प्र. 24. स्मृतिग्रन्थों में सर्वाधिक महत्त्व किसका है? उसकी रचना किसने की?

प्र. 25. स्मृतियों का अध्ययन महत्त्वपूर्ण क्यों है?

प्र. 26. सभी मानवों का पिता किसे कहा गया है?

प्र. 27. *मनुस्मृति* में किसका विवेचन किया गया है?

प्र. 28. तीन स्मृतिग्रन्थों के नाम लिखिए।

प्र. 29. *मनुस्मृति* और *याज्ञवल्क्यस्मृति* के अध्यायों की संख्या बताइए।

प्र. 30. *वीरचिन्तामणि* में किस विषय पर विचार किया गया है तथा उसके लेखक कौन हैं?

प्र. 31. गजशास्त्र और अश्वशास्त्र के एक-एक ग्रन्थ का नाम दीजिए।

प्र. 32. गणित के क्षेत्र में किन-किन ग्रन्थकारों का महान् योगदान रहा है?

प्र. 33. फलित ज्योतिष पर वराहमिहिर के कौन-कौन से ग्रन्थ हैं?

प्र. 34. नास्तिक दर्शन के कितने रूप मिलते हैं? वे क्या-क्या हैं?

प्र. 35. चार्वाक दर्शन का संस्थापक कौन है?

प्र. 36. बौद्ध धर्म किसके द्वारा आरम्भ हुआ?

प्र. 37. किन-किन देशों में बौद्ध धर्म का विकास हुआ?

प्र. 38. बौद्ध दर्शन की शाखाओं के नाम लिखिए।

प्र. 39. आस्तिक दर्शन के छः रूपों के नाम लिखिए।

प्र. 40. न्यायदर्शन का प्रवर्त्तक कौन है?

प्र. 41. *तात्पर्यटीका* किसकी रचना है?

प्र. 42. जयन्तभट्ट किस प्रसिद्ध ग्रन्थ का लेखक है?

प्र. 43. अलंकार शास्त्र के अन्य नाम बताइए।

प्र. 44. अर्थशास्त्र में किन-किन विषयों का वर्णन है? पचास शब्दों में लिखिए।

प्र. 45. नीतिशास्त्र के पाँच प्रमुख ग्रन्थों के नाम लिखिए।

प्र. 46. रिक्त स्थानों को भरिए—

(क) राजनीति विषयक सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ कौटिल्य का............................है।

(ख) कौटिल्य का दूसरा नाम .... है।

(ग) भरतमुनि .... शास्त्र के रचयिता हैं।

(घ) तत्त्वचिन्तामणि .... की रचना है।

(ड) मीमांसा का आरम्भ .... के मीमांसा सूत्रों से होता है।

(च) .... और .... ने मीमांसा में दो पृथक् संप्रदाय चलाए।

(छ) .... को उपवेद माना गया है।

2019-2020

© NCERT not to be republished

प्र. 47. निम्नलिखित दर्शनों का प्रवर्त्तक कौन है?

(क) वेदान्तदर्शन ....

(ख) न्यायदर्शन ....

(ग) वैशेषिकदर्शन ....

(घ) सांख्यदर्शन ....

(ङ) योगदर्शन ....

(च) मीमांसादर्शन ....

प्र. 48. कोष्ठक से लेखकों को चुनिए—

काव्यालंकार ....

काव्यादर्श ....

काव्यालंकारसूत्र ....

ध्वन्यालोक . ...

वक्रोक्तिजीवित ....

काव्यमीमांसा ....

(कुन्तक, राजशेखर, भामह, दण्डी, आनन्दवर्धन, वामन)

प्र. 49. लेखक और शास्त्रों को ठीक-ठीक मिलाइए—

लेखक	**शास्त्र**
वाग्भट	कामसूत्र
नागार्जुन	चरकसंहिता
चरक	अष्टांगसंग्रह
वात्स्यायन	योगसार
भास्कराचार्य	पञ्चसिद्धान्तिका
वराहमिहिर	लीलावती

प्र. 50. ठीक-ठीक जोड़िए—

वनस्पतिविज्ञान	रागविबोध
शिल्पशास्त्र	नवरत्नपरीक्षा
मूर्तिकला	नलपाक
रत्नविज्ञान	वास्तुमण्डल
पाकशास्त्र	मानसार
रसरत्नसमुच्चय	यन्त्रसर्वस्व
विमानविद्या	रसायनशास्त्र
संगीतशास्त्र	उपवनविनोद

2019-2020

not to be republished © NCERT

प्र.51. ग्रन्थकार, ग्रन्थ और काल ठीक-ठीक मिलाइए—

ग्रन्थकार	**ग्रन्थ**	**काल**
मम्मट	रसगंगाधर	चौदहवीं शताब्दी
विश्वनाथ	काव्यप्रकाश	बारहवीं शताब्दी
जगन्नाथ	साहित्यदर्पण	सोलहवीं शताब्दी

प्र.52. ठीक-ठीक जोड़िए—

बादरायण	वेदान्तसार
वल्लभाचार्य	श्रीभाष्य
रामानुज	द्वैतसिद्धान्त
मध्वाचार्य	शुद्धाद्वैतसिद्धान्त
सदानन्द	ब्रह्मसूत्र

© NCERT not to be republished